|  |
| --- |
| 30. November |
| **Fest des heiligen Apostels Andreas** |
| Lesung: Röm 10,9-18; Evangelium.: Mt 4,18-22 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht vom wahren Licht |
|  | GL 542, 1+4+6 | Ihr Freunde Gottes |
|  | GL 481, 1+5-7 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir, Gott, im Himmel Preis und Ehr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 19,2-5b |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 35, 1 | Ein Tag sagt es jubelnd |
|  | oder |  |
|  | Psalmenlied: |  |
|  | GL 381, 1+2 | Dein Lob, Herr |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 8 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Folgt mir nach!*  |
|  | *Ich werde euch zu Menschenfischern machen.* |
|  |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 221, 1+2+5 | Kündet allen in der Not |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 193 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  | GL 723,  | O komm, Erlöser, Gottes Sohn |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 484, 1+2+5+6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 726, 1+6 | Gepriesen sei der starke Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 380, 1+4 | Großer Gott |